PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

छन्द

- छंद शब्द 'छद्' धातु से बना है जिसका अर्थ - 'आह्लादित करना', 'खुश करना'।
- 'वर्णों या मात्राओं के नियमित संख्या के विन्यास से यदि आह्लाद पैदा हो, तो उसे छंद कहते हैं'। छंद का सर्वप्रथम उल्लेख 'ऋग्वेद' में मिलता है। छंद का दूसरा नाम पिंगल भी है। जिस प्रकार गद्य का नियामक व्याकरण है, उसी प्रकार पद्य का छंद शास्त्र है।

छंद के अंग

1. वर्ण /अक्षर
2. मात्रा
3. यति
4. गति
5. पाद / चरण
6. तुक
7. गण

1.वर्ण / अक्षर

- एक स्वर वाली ध्वनि को वर्ण कहते हैं, चाहे वह स्वर ह्रस्व हो या दीर्घ।
- जिस ध्वनि में स्वर नहीं हो उसे वर्ण नहीं माना जाता।
- वर्ण को ही अक्षर कहते हैं।
- वर्ण 2 प्रकार के होते हैं-
- ह्रस्व वर्ण - अ, इ, उ, ऋ, क, कि, कु, कृ (इनकी एक मात्रा को 'I' से व्यक्त करते है।)
- दीर्घ वर्ण - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, का, की, कू, के, कै, को, कौ (इनकी एक मात्रा को 'S' से व्यक्त करते है।)

2. मात्रा -

- किसी स्वर के उच्चारण में जितना समय लगता है, उसे ही मात्रा कहते है।
- नोट - सस्वर अक्षर को 'वर्ण' तथा केवल स्वर को 'मात्रा' कहते है।
- ह्रस्व स्वर वाले वर्ण (ह्रस्व वर्ण) (एकवर्णी, एकमात्रिक) - अ, इ, उ, ऋ, क, कि, कु, कृ (इनकी एक मात्रा को 'I' से व्यक्त करते है।)
- दीर्घ स्वर वाले वर्ण (एकवर्णी, द्विमात्रिक) - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, का, की, कू, के, कै, को, कौ (इनकी एक मात्रा को 'S' से व्यक्त करते है।)
- अनुस्वार युक्त वर्ण गुरू होता है। जैसे -
  पं, कं (इसमें मात्रा 'S' का प्रयोग होगा।)

3. यति/विराम

- छंदो को पढ़ते समय साँस लेने के लिए रुकना पड़ता है, इसी रूकने के स्थान को यति या विराम कहते हैं।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

4. गति

- छंद के पढ़ने के प्रवाह या लय को गति कहते हैं।

  जैसे-

  'दिवस का समापन था समीप' में गति नहीं है जबकि 'दिवस का समापन समीप था' में गति है।

5. पाद / चरण

- प्रत्येक छंद मे कम से कम चार चरण होते हैं। तथा किसी -किसी में ज्यादा भी होते है। इन्हीं पंक्तियों को चरण कहते है।
- कुछ छंदों में चरण तो चार होते हैं लेकिन वे लिखे दो ही पंक्तियों में जाते हैं,

  जैसे - दोहा , सोरठ आदि। ऐसे छंद की प्रत्येक पंक्ति को 'दल' कहते हैं।
- मात्राओं के आधार पर चरणों को सम तथा विषम चरणों मे विभक्त किया जाता है।

6.तुक

- छंद के पदो के अन्त मे जो अक्षरों की समानता पायी जाती है, तकु कहलाते है।

  जैसे -

  सोई - होई, भार - धार

7. गण (केवल वर्णिक छंदो पर लागू)

- गण का अर्थ है 'समूह'।

गणों की संख्या 8 है-

- यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण, सगण
- गणों को याद रखने के लिए सूत्र- यमाताराजभानसलगा

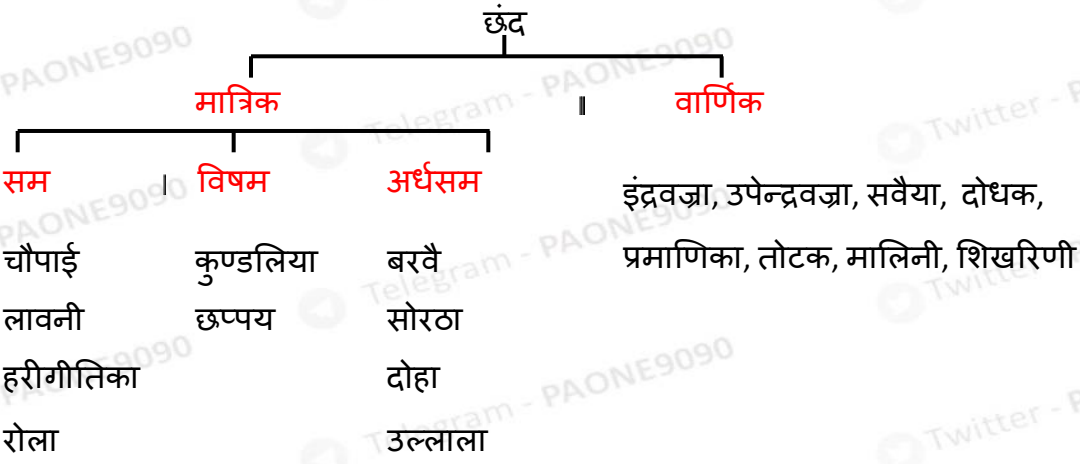

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

छन्द के प्रकार -

- मुख्यतः 2 प्रकार

  1. मात्रिक छंद 2. वार्णिक छंद

- मुक्त छंद जिस -छंद में वर्णिक या मात्रिक प्रतिबंध न हो। (जन्मदाता - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराल')

मात्रिक छंद

- मात्रिक छंद के सभी चरणों में मात्राओं की संख्या तो समान रहती है इसमें वर्णों के क्रम का कोई ध्यान नहीं रखा जाता।

प्रमुख मात्रिक छंद

- सम मात्रिक छंद - जिसमें सभी चरणों मे मात्राओं की संख्या समान हो

  जैसे -

  चौपाई (), लावनी( ), हरीगीतिका (), रोला()

- विषम मात्रिक छंद - जिसमें प्रथम, तृतीय चरणों व द्वितीय, चतुर्थ तरणों मे मात्राओं की संख्या समान हो।

  जैसे -

  कुण्डलियां(प्रत्येक चरण में 24 मात्रा), छप्पै(प्रथम चार चरण मे 24 मात्रा, अंतिम दो चरण मे 28 मात्रा),

  कुण्डलिया (दोहा + रोला), छप्पय (रोला + उल्लाला)

- अर्द्धसम मात्रिक छंद - जिसके प्रथम व तृतीय चरण मे तथा द्वितीय व चतुर्थ चरणों में मात्रा समान हो।

  जैसे -

  बरवै(12-7), सोरठा(11-13), दोहा(13-11), उल्लाला(15-13)

दोहा छंद

- यह एक अर्द्धसम मात्रिक छंद है,
- इसमें चार चरण होते हैं
- पहले और तीसरे चरण में 13 तथा दूसरे और चौथे चरण में 11 मात्राएँ होती हैं।

  जैसे -

  गुरु गोविंद दोउ खड़े, काके लागूं पाँय ।
  बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो मिलाय॥

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

चरण 1- गुरु गोविंद दोउ खड़े, (13)
चरण 2- काके लागूं पाँय। (11)
चरण 3- बलिहारी गुरु आपने, (13)
चरण 4- गोविंद दियो मिलाय (11)

सोरठा छंद-

- अर्द्धसम मात्रिक छंद है,
- यह दोहा छंद का ठीक उल्टा होता है,
- इसमें भी चार चरण होते हैं।
- इसके पहले और तीसरे चरण में 11-11 तथा दुसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं।

जैसे -

जो सुमिरत सिधि होय, गन नायक करिबर बदन।
करहु अनुग्रह सोय, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन॥
चरण 1- जो सुमिरत सिधि होय (11)
चरण 2- गन नायक करिबर बदन (13)
चरण 3- करहु अनुग्रह सोय (11)
चरण 4- बुद्धि रासि सुभ गुन सदन (13)

रोला छंद-

- रोला एक सम मात्रिक छंद है।
- इसके प्रत्येक चरण में मात्राओं कि संख्या समान रहती है।
- इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं, जिसमे 11 और 13 मात्राओं पर यति होती है।

जैसे -

यही सयानो काम, राम को सुमिरन कीजै।
परस्वारथ के काज-, शीश आगे धर दीजै॥
चरण 1- यही सयानो काम, राम को सुमिरन कीजै। (24)
चरण 2- परस्वारथ के काज-, शीश आगे धर दीजै॥ (24)

चौपाई -

- चौपाई एक सम मात्रिक छंद है।
- चौपाई में चार चरण होते है
- जिसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती है।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

- चरण के अंत में गुरु या लघु नही होता है परंतु दो लघु और गुरु हो सकते है।

जैसे -

बन्दउँ गुरुपद पदुम परागा।
सुरुचि सुवास सरस अनुरागा।।
अमिय मूरिमय चूरन चारू।
समन सकल भव रुज परिवारू।।

कुंडलियाँ -

- यह विषम मात्रिक एवं संयुक्त छंद है।
- इस छंद का निर्माण दोहा और रोल के संयोग से होता है।
- इसमें 6 चरण होते है। इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती है।

जैसे -

कोई संगी उत नही है इत को ही संग।
पथी लेहु मिलि ताहि ते सबसों सहित उमंग।।
सबसों सहित उमंग बैठि तरनी के माहीं नदिया नाव संजोग फेरि मिलिहैं पहनाही।। बरनै दीनदयाल पार पुनि भेंट न होई। अपनीअपनी गैल पथी जों सब कोई।।-

हरिगीतिका -

- यह एक सम मात्रिक छंद है।
- इसमें चार चरण होते है।
- जिसके प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती है तथा 16 और 12 मात्रा पर यति होता है।

जैसे -

खगवन्द सोता है अतः कल कल नही होता वहाँ।-
बस मन्द मारुत का गमन की मौन है खोता जहाँ।।
इस भाँति धीरे से परस्पर कह कह सजगता की कथा।
यों दिखते है वृक्ष ये हों विश्व के प्रहरी यथा।।

बरवै -

- यह एक अर्द्धसम मात्रिक छंद है।
- इसमे चार चरण होते है।
- इस छंद में कुल 38 मात्राएँ होती है।
- इसके प्रथम और तृतीय चरण में 12 तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणों मे 7 मात्राएँ होती है।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

जैसे -

तुलसी राम नाम सम, मीत न आन।
जो पहुँचाव रामपुर, तनु अवसान।।

वर्णिक छंद

- वर्णिक छंद के सभी चरणों में वर्णों की संख्या समान रहती है और लघुगुरु का क्रम समान रहता - है।
- प्रमुख वर्णिक छंद : इंद्रवज्रा (सभी 11 वर्ण), उपेन्द्रवज्रा (सभी 11 वर्ण), सवैया (सभी 24 वर्ण), दोधक(सभी 11 वर्ण), प्रमाणिका (8वर्ण), तोटक (सभी 12 वर्ण), मालिनी (15 वर्ण), शिखरिणी(सभी 17 वर्ण)

मुक्त छंद

- जिस छंद में वर्णित या मात्रिक प्रतिबंध न हो, न प्रत्येक चरण में वर्णों की संख्या और क्रम समान हो और मात्राओं की कोई निश्चित व्यवस्था हो तथा ताल के आधार पर पंक्तियों में लय लाकर उन्हें गतिशील करने का आग्रह हो, वह मुक्त छंद है।

जैसे -

1. निराला की कविता 'जूही की कली'
2. वह तोड़ती पत्थर,
   देखा मैने उसे,
   इलाहाबाद में पथ पर इत्यादि।